महिला उद्यमिता की समस्याएं एवं संभावनाएं : एक अध्ययन

रत्ना मिश्रा[1], डॉ. उषा शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत
[2]सहायक प्राध्यापक वाणिज्य विभाग, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल म.प्र.) भारत

सारांश

वर्तमान समय में उद्यमिता किसी भी देश की आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक विकास का आधार बन चुका है। उद्यमिता एक ऐसी तकनीक या कार्यविधि है, जिसमें व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा लाभ कमाना चाहता है। आज देश एवं दुनिया में महिला एवं पुरूष दोनों उद्यमी अपना उद्योग चला रहे हैं और विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। एक उद्यमी के रुप में यह कह सकते हैं कि महिला उद्यमी वे महिलाएं होती हैं जो व्यावसायिक विचारों को उत्पन्न करके उन्हें साकार रुप प्रदान करती हैं। हमारे देश में अधिकांश पुरुष उद्यमी अपने उद्यम को चलाने में सफल रहे हैं क्योंकि उन्हें परिवार, समाज इत्यादि का भरपूर सहयोग मिलता रहा है परन्तु वहीं महिला उद्यमी के समक्ष अनेक चुनौतियॉ होती हैं, जिनका उन्हे सामना करना पडता है जो महिलाओं इन चुनौतियों का सामना कर पाती हैं वे सफल हो जाती हैं और जो इन चुनौतियों का सामना नहीं कर पाती हैं, वे असफल हो जाती हैं। इस लेख का प्रमुख उद्देश्य है, महिला उद्यमिता अथवा महिला उद्यमी के सम्मुख आने वाली समस्याओं के बारे में जानना एवं महिला उद्यमियों के लिए भविष्य की संभावनाओं के बारे में जानना। यह लेख पूर्णतः द्वितीयक ऑकडों एवं कुछ अनुभवों पर आधारित है। समस्याओं को जानने के लिए विभिन्न लेखों एवं विवरणों का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन से यह पता चला कि हमारे देश में महिला उद्यमियों के सम्मुख अनेक समस्याएं आती हैं, जैसेः– परिवारिक सहयोग में कमी, पुरुष प्रधान विचारधारा, निर्णय की स्वतंत्रता न होना, जोखिम वहन करने की क्षमता में कमी, जागरुकता की कमी, आत्मविश्वास की कमी, अनुभव की कमी, वित्तीय स्थिति इत्यादि, परन्तु सरकार और परिवार के सहयोग से इस क्षेत्र में भी महिलाओं के योगदान को और अधिक बढ़ाया जा सकता है। महिलाओं को जागरुक करके एवं समाज की विचारधारा में बदलाव लाकर भी महिला उद्यमिता में सहयोग किया जा सकता है।

प्रमुख शब्दः–उद्यमी, साहस, रूढ़िवादी विचार, विकास, आत्मविश्वास

I प्रस्तावना

उद्यमिता एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के द्वारा की जाने वाली एक ऐसी उद्देश्यपूर्ण प्रकिया से है जिसमें अन्तर्गत किसी ऐसी व्यावसायिक इकाई का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया जाता है जो उच्चतम आर्थिक लाभ प्रदान कर सके। उद्यमिता आर्थिक, सामाजिक विकास का आधार स्तम्भ है। उद्यमी एक ऐसा व्यक्ति होता है, जो जोखिम उठाने का साहस करता है, जो किसी विशेष कार्य को पूर्ण करने के लिए आवश्यक पूँजी तथा श्रम की व्यवस्था करता है एवं जो व्यवसाय का निरीक्षण करता है। अल्फ्रेड मार्शल के अनुसार ''महिला उद्यमी वे उद्यमी होती हैं जो किसी व्यवसाय का संचालन करती हैं एवं उस पर नियंत्रण रखती हैं।'' पिछले कुछ वर्षो में यह पाया गया है कि महिला उद्यमियों की आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ रही है। देश एवं दुनिया में कई ऐसी सफल महिला उद्यमी हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र में सफलता हासिल की है और अपने उद्यम को एक नई उॅचाई पर लेकर आयीं हैं जैसेः– वंदना लूथरा, किरण मजूमदार, इदिरा नूई, फाल्गुनी नायर इत्यादि। आज महिलाएं समाज की प्राचीन विचारधाराओं को पीछे छोड़कर आगे बढ़ रही हैं, व्यवसाय में आने वाली नयी चुनौतियों एवं व्यवसायिक अवसरों का सामना करना पसंद करती हैं। आज पढ़ी–लिखी महिलाएं घर की चार दीवारी में कैद होकर रहना पसंद नहीं करती हैं, बल्कि अपना स्वयं का रोजगार स्थापित कर रही हैं, एवं अपनी व्यवसायिक योग्यता को सिद्ध कर रही हैं। आज महिलाएं समाज एवं परिवार में बराबरी का दर्जा चाहती हैं। वे बखूबी अपनी घरेलू एवं व्यावसायिक दोनों जिम्मेदारियों में संतुलन बनाकर कार्य कर रही है। वर्तमान में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि घर के साथ–साथ व्यवसाय का संचालन भी कुशलतापूर्वक कर सकती हैं। अब महिलाएं समाज की पुरुष प्रधान विचारधारा को टक्कर दे रही हैं और पुरूषों को व्यवसायिक चुनौतियॉ भी दे रही है। सरकार भी कई तरह की योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक सहयोग करने एवं आगे बढ़ाने का प्रयास कर रही है, परन्तु अभी भी औद्योगिक क्षेत्र में महिला उद्यमियों की भागीदारी बहुत कम पायी जाती है, अगर हम विकसित देशों की बात करें तो वहॉ कि महिलाएं बिना किसी दबाव के अपना उद्योग चला रही हैं और आर्थिक विकास में अपना योगदान दे रही हैं वहीं, हमारे देश में महिला उद्यमियों को अनेक समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

II उद्देश्य

हर काम किसी न किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है इस शोध लेख को भी लिखने के कुछ उद्देश्य हैं जिनमें कुछ निम्नानुसार हैः–

(क) महिला उद्यमिता अथवा महिला उद्यमी के समक्ष आने वाली चुनौतियों एवं समस्याओं का अध्ययन करना।

(ख) महिला उद्यमियों के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों का अध्ययन करना।

III शोध प्रविधि

यह लेख द्वितीयक ऑकड़ों एवं अनुभव पर आधारित है। इस लेख में विवरणात्मक या वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस लेख बताई गई समस्याएं एवं तर्क संबंधित लेखकों द्वारा किये गये शोध कार्यों पर आधारित हैं। वर्तमान लेख में कुछ प्रमुख समस्याओं का विवरणात्मक अध्ययन किया गया है।

IV साहित्य की समीक्षा

महिला उद्यमिता से सम्बन्धित कई साहित्य/लेख लिखे गये हैं, जिनमें से कुछ साहित्यों की समीक्षा निम्नानुसार की जा रही है:–

(क) मंजू तेम्ब्रे:– इन्होंने 2020 में ''भारत में महिला उद्यमिता की समस्याएं एवं संभावनाएं'' नामक शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया कि अगर महिला सशक्त है तो वह आवाज उठा सकती है, अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकती है, अपने अधिकारों का अच्छी तरह उपयोग कर सकती है। महिलाओं के समक्ष आने वाली कई चुनौतियों को वह आसानी से सुलझा सकती है।

(ख) योगेन्द्र कुमार मिश्रा :–इनके शोध '' भारत में महिला उद्यमिता विकास'' के द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि हमारे देश में आज भी महिलाएं पुरुषों पर आश्रित होती हैं। आज भी समाज में परिवारिक एवं व्यावसायिक दोनों में पुरुषों के निर्णय को महत्व दिया जाता है। महिला उद्यमियों को ढेर सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सरकार द्वारा महिलाओं के लिए कई योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। वर्तमान में महिलाओं की स्थिति पहले से कहीं बेहतर है।

V महिला उद्यमिता की समस्याएं

अनेक परिवर्तनों के बावजूद हमारे देश में महिलाओं को अभी भी सक्षम नहीं माना जाता है। उद्यमिता के क्षेत्र में आज भी महिला उद्यमियों के समक्ष अनेक समस्याएं एवं चुनौतियॉ है। कुछ प्रमुख समस्याएं निम्नानुसार हैं:–

(क) पुरूष प्रधान विचार धारा:– हमारे समाज आज भी पुरुष प्रधान विचारधारा पर चलता है। उनका यही मानना है कि, पुरुषों को ही व्यवसाय करना चाहिए और महिलाओं को घर की जिम्मेदारियॉ संभालना चाहिए। आज भी महिलाओं का उद्योगों एवं व्यवसायिक गतिविधियों में प्रवेश वर्जित माना जाता है।

(ख) परिवारिक सहयोग का अभाव:– हमारे देश में पारिवारिक व्यवस्था भी एक प्रमुख बाधा है। महिला उद्यमी को अपने ही परिवार से सहयोग नहीं मिलता है। अधिकांशतः यह देखा गया है कि परिवार की महिला ही महिला उद्यमी का शोषण करती है, उसे अपना प्रतिद्वन्दी समझने लगती हैं और उसका सहयोग नहीं करती है।

(ग) निर्णयन क्षमता का अभाव :–महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता कम होती है। आज भी महिलाएं किसी भी कार्य को करने के लिए परिवार के पुरुषों पर निर्भर रहती है। परिवार के अधिकतर निर्णय पुरुष सदस्यों के द्वारा ही लिए जाते हैं। महिलाएं अगर कोई व्यवसाय करने का निर्णय ले भी लें तब भी व्यवसाय के अन्य कार्यों के लिए पुरुषों की अनुमति एवं सहायता आवश्यक होती है।

(घ) जोखिम वहन करने की क्षमता का अभाव :– महिलाएं जोखिम नहीं उठाना चाहती हैं। उनमें जोखिम सहन करने की क्षमता कम होती है। वे अधिकांशतः लाभ अर्जित करना चाहती है, क्योंकि व्यवसाय में हानि होने पर महिला उद्यमी को परिवार में एवं समाज में कई तरह की आलोचनाओं को सहन करना पड़ता है।

(च) आत्मविश्वास का अभाव :– किसी भी व्यवसाय को सफल बनाने के आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। परिवार और समाज के लोग महिलाओं का आत्मविश्वास कम करने के लिए कई तरीके अपनाते है और अधिकांशतः यह पाया गया है कि महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी होती है। वे अपने आप पर यह विश्वास ही नहीं करती है कि वे भी व्यवसाय स्थापित कर सकती है।

(छ) व्यावसायिक षिक्षा का अभाव:–महिलाओं के पास शिक्षा का अभाव होना भी एक समस्या है। महिलाओं के पेशेवर योग्यता कम होती है जिसकी वजह से महिलाएं अपना उद्योग स्थापित करने के बारे में ज्यादा सोचती है। हम महिलाओं की शिक्षित तो कर रहे हैं परन्तु उन्हें व्यावसायिक योग्यता अथवा पेशेवर योग्यता प्रदान करने पर जोर नहीं देते हैं।

(ज) वित्त सम्बन्धी स्वतंत्रता न होना :–भारतीय समाज में महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता नहीं दी जाती है। उन्हें वित से सम्बन्धित किसी भी निर्णय के लिए अपने परिवार के सदस्यों की सहमति लेनी होती है। महिलाओं को कोई भी कार्य अथवा व्यावसायिक गतिविधियों के परिवार के पुरुष सदस्यों की अनुमति लेना आवश्यक होता है उसके बिना वह कोई भी कार्य नहीं कर सकती हैं।

(झ) सम्पत्ति के उपयोग पर पूर्ण अधिकार न होना:–इसमें कोई संदेह नहीं है कि सरकार महिलाओं को सम्पत्ति में बराबरी का अधिकार दिया है परन्तु आज भी समाज में महिलाओं को सम्पत्ति पर अधिकार नहीं दिये जाते हैं। कुछ ही महिलाओं के पास अपनी स्वयं की सम्पत्ति है अथवा सम्पत्ति पर अधिकार है।

(ट) लक्ष्य निर्धारण :–समाज की अधिकांष महिलाएं कभी परिवार की वजह से तो कभी समाज की व्यवस्था की वजह से अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं कर पाती हैं। जिन महिलाओं ने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया वे एक सफल उद्यमी के रुप में अपने आप को स्थापित कर लिया है जैसे– इंदिरा नुई, फाल्गुनी नायर आदि।

(ठ) परिवार एवं व्यवसाय के बीच सामंजस्य का अभाव :– अधिकतर यह देखा गया है कि भारतीय महिलाएं अपने परिवार को ज्यादा महत्व देती हैं परन्तु वे अपने परिवार के साथ–साथ अपने व्यवसाय को भी उतना समय नहीं दे

पाती हैं जितना अपने परिवार को देती हैं। परिवार और व्यवसाय के बीच सामंजस्य स्थापित करने में समस्याएं आती है। महिलाएं अपना सम्पूर्ण जीवन परिवार की देखरेख करने में व्यतीत कर देती हैं परन्तु अपने लिए कुछ नहीं करती हैं। कुछ महिलाओं में बहुत सी औद्योगिक विशेषताएं होती हैं परन्तु वे उनका उपयोग नही कर पाती हैं।

(ड) महिलाओं का व्यावसायिक स्वामित्व स्वीकार्य न होना :– महिलाओं में चाहे कितनी ही काबिलियत हो परन्तु कभी–कभी महिला उद्यमियों को पुरुष श्रमिकों के साथ काम करने में समस्या आती है और पुरुष श्रमिक भी महिला उद्यमियों के साथ काम नहीं करना चाहते हैं।। अधिकतर कम शिक्षित पुरुष महिलाओं के स्वामित्व को स्वीकार नहीं करते हैं। वे अपने से शीर्ष पद पर महिला अधिकारी को स्वीकार नहीं करते है।

(ढ) सफल उद्यमियों के साथ सहभागिता में कमी:–महिला उद्यमियों के बीच एक प्रमुख समस्या यह भी है कि वे सफल उद्यमियों से नहीं मिल पाती हैं और उनके अनुभवों को नहीं जान पाती हैं। सफल उद्यमी दूसरी महिलाओं के लिए जो कि एक सफल उद्यमी बनना चाहती हैं उनके लिए एक मिशाल की तरह होती हैं। परन्तु दुर्भाग्य से हमारे पास ऐसे बहुत कम माध्यम होते हैं जिनके द्वारा सफल उद्यमियों से मिला जा सके।

(त) स्थान विशेष की पाबन्दी होना :– महिलाओं के समक्ष एक समस्या स्थान विशेष की भी होती है। अगर वह अपना व्यवसाय स्थापित करना भी चाहें तो उन्हें उसी जगह पर स्थापित करना होता है जहॉ की वह महिला है। उसे किसी दूसरे जगह जाकर अपना व्यवसाय स्थापित करने की इजाजत नहीं होती है।

(थ) जागरुकता का अभाव :– महिलाओं को योजनाओं के बारे में जानकारी न होना भी एक समस्या है। किसी भी व्यवसाय को शुरु करने से पहले उसके बारे में पूरी जानकारी होना आवश्यक होता है परन्तु महिलाओं के विषय में यह एक समस्या है। जिन्हें इसकी थोड़ी बहुत जानकारी वे सही सलाह न मिल पाने की वजह से भी अपना उद्योग शुरु नहीं कर पाती हैं।

VI महिला उद्यमियों के क्षेत्र में भविष्य के लिए सुझाव

(क) महिलाओं के लिए व्यवसायिक गतिविधियों से संबंधित जागरुकता अभियान चलाया जाना चाहिए।

(ख) महिलाओं को समय–समय पर व्यावसायिक संस्थानों के माध्यम से आवश्यक प्रशिक्षण दिये जाने चाहिए।

(ग) राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सेमिनारों का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे सफल उद्यमी महिलाओं के माध्यम से व्यवसाय से सम्बन्धित जानकारियॉ प्राप्त हो सकें।

(घ) महिलाओं के कौशल विकास के लिए प्रयोगशालाओं का निर्माण किया जाना चाहिए।

(च) स्थानीय स्तर पर सूक्ष्म वित्त सम्बन्धी प्रावधान बनाए जाने चाहिए जिससे महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जा सके।

(छ) महिलाओं को अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए।

(ज) समय के अनुसार अपने आप में बदलाव लाने चाहिए।

(झ) महिलाओं को अपने अधिकार के बारे में को जागरूक होना चाहिए एवं उनका प्रयोग करना चाहिए।

(ट) स्थानीय स्तर राज्य स्तर राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे आयोग बनाये जाने चाहिये जिनमें महिला उद्योग से सम्बन्धित समस्याओं एवं सुझावों पर विचार किया जा सके।

(ठ) कार्यशील पूँजी को बढ़ाने में सहयोग किया जाना चाहिए।

(ड) ऋण लेने एवं देने की प्रक्रिया को और सरल बनाया जाना चाहिए जिससे महिलाओं को ऋण लेने एवं उसे चुकाने में सहायता मिल सके।

(ढ) महिलाओं को परिवार एवं व्यवसाय में सामंजस्य स्थापित करने के तरीको को समझना होगा।

(त) महिला उद्यमियों को अपना कुछ समय यह जानने और समझने में व्यतीत करना चाहिए कि वे अपनी औद्योगिक समस्याओं को हल कर सकती हैं।

(थ) शैक्षणिक संस्थानों को सरकारों के साथ मिलकर योजना बनानी चाहिए जिससे महिलाओं को उद्योगों से सम्बन्धित शिक्षा प्राप्त करने में आसानी हो सके।

(द) सरकार को उद्यमों से सम्बन्धित योजनाओं की वित्तीय राशि को बढ़ाना चाहिए।

(ध) व्यावसायिक प्रशिक्षणों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिससे महिलाएं उत्पादन सम्बन्धी प्रकिया के बारे में जानकारियॉ प्राप्त कर सके।

(न) महिलाओं को उद्योगों के बारे में प्रशिक्षण लेते रहना चाहिए और उनका प्रयोग भी करते रहना चाहिए।

VII निष्कर्ष

बहुत से शोधपत्रों लेखों विवरणों का अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकला कि महिला उद्यमियों के समक्ष अनेक समस्याएं होती हैं जिनसे होकर एक महिला उद्यमी को गुजरना पड़ता है। परन्तु अब समय बदल रहा है परिस्थितियॉ बदल रही हैं महिलाएं अब घर की चार दीवारी में कैद होकर नहीं बल्कि घर से बाहर निकल रही हैं अपनी काबिलियत को सिद्ध कर रही हैं। प्रतिस्पर्धा का सामना कर रही हैं। सरकार भी ऐसी कई योजनाएं चला रही है जिससे महिला उद्यमिता को बढ़ावा मिल सके। महिलाओं का सहयोग करने के सारे प्रयास सरकार द्वारा किये जा रहे हैं। अब महिलाएं भी जागरुक हो रही हैं अपनी शिक्षा पर ध्यान दे रही हैं। महिलाएं समाज में परिवर्तन ला रही हैं लोगों की विचारधारा बदल रही हैं। वित्तीय संस्थाएं एवं बैंक भी महिला उद्यमिता में योगदान

दे रहे हैं। बैंकों द्वारा भी कई ऐसी योजनाएं चलायी जा रही हैं जिससे महिलाओं को अपना व्यवसाय स्थापित करने में सहायता प्राप्त हो सके। वर्तमान में महिलाओं की भागीदारी हर क्षेत्र में बढ़ रही है। हम यह कह सकते हैं कि एक महिला भी सफल उद्यमी बन सकती है। अपनी पारिवारिक एवं व्यावसायिक दोनों जिम्मेदारियों में अच्छा सामंजस्य स्थापित कर सकती हैं। वर्तमान में कई सफल महिला उद्यमी हमारे देश में हैं जिन्होंने देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान दिया है। कुछ सुझावों को अपनाकर भविष्य में महिला उद्यमियों एवं उनके आर्थिक योगदान को बढ़ाने में सहायता की जा सकती है।

संदर्भ सूची

[1] Dr.Ramesh B.,(PDF)(2018)," PROBLEMS AND PROSPECTIVE OF WOMEN ENTREPRENEURSHIP IN INDIA" 2018 IJRAR Jan 2018, Volume 5, Issue 1(E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

[2] Gaur sheweta* & Kulshreshtha Vijay & Dr. Chaturvedi Ravi ***Challenges And Opportunities For Women Entrepreneurs In India[VOLUME 5 I ISSUE 3 I JULY– SEPT 2018] E ISSN 2348 –1269, PRINT ISSN 2349-5138

[3] MISHRA K.YOGENDRA AND SINGHD.P. 1,(2015)" WOMEN ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT IN INDIA",International Journal for Exchange of Knowledge; 2 (2) : 112-120, 2015,ISSN: 2394 – 1669 (Online)

[4] Verheul, I., Van Stel, A. and Thurik, R. (2006), "Explaining female and male entrepreneurship at the country level", Entrepreneurship & Regional Development, Vol. 18, pp. 151-83.

[5] Tembhre Manju,(2020) "Challenges and Prospects of women empowerment in india" https://www.researchgate.net/publication/340863026

[6] meena kailash, kailasheducation.com 8/29/2020

[7] Goyal menu and jai prakash(2011)," women entrepreneurship in india- problems and prospects"international journal of multidisciplinary research , Vol.1 issue 5, sept.2011

[8] M. Kumbhar vijay "Some Critical Issues of Women Entrepreneurship in Rural India" EUROPEAN ACADEMIC RESEARCH, VOL. I, ISSUE 2/ MAY 2013 ISSN 2286-4822, www.euacademic.org

[9] Mathur Ashish,(2011), "Women Entrepreneurs in the Indian Agricultural Sector", ZENITH International Journal of Business Economics & Management Research, Vol.1 Issue 2, Nov 2011, Online available at http://zenithresearch.org.in/